01-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - परचिंतन छोड़ अपना कल्याण करो, तुम सोने जैसा बनकर औरों को रास्ता बताओ"

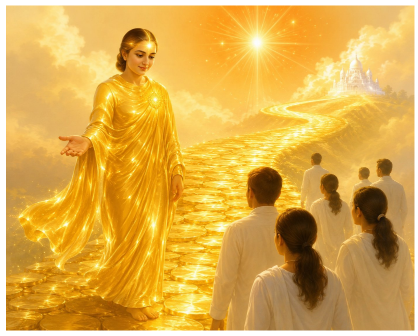

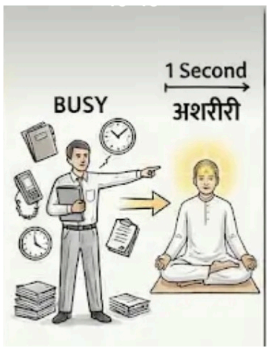

प्रश्नः- अशरीरी बनने का अभ्यास जो सदा करते रहते, उनकी मुख्य निशानी सुनाओ?

उत्तर:- (1) वे हठ से अपनी कर्मेन्द्रियों को वश नहीं करते। लेकिन उनकी कर्मेन्द्रियाँ स्वत: शीतल हो जाती हैं। (2) हम आत्मा भाई-भाई हैं, यह स्मृति स्वत: रहती है। (3) देह-अभिमान छूटता जाता है। (4) नाम रूप का नशा खत्म होता जाता है। (5) दूसरों की याद नहीं आती है।

From देह अभिमानी → To देही अभिमानी

गीत:-तू प्यार का सागर है... Click

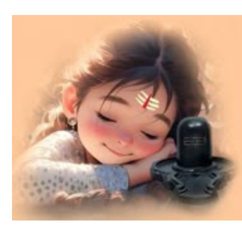

तू प्यार का सागर है
तेरी इक बूँद के प्यासे हम
लौटा जो दिया तुमने, चले जायेंगे जहाँ से हम
तू प्यार का सागर है ...

घायल मन का, पागल पंछी उड़ने को बेक़रार
पंख हैं कोमल, आँख है धुँधली, जाना है सागर पार
जाना है सागर पार
अब तू हि इसे समझा, राह भूले थे कहान से हम
तू प्यार का सागर है ...

इधर झूमती गाये ज़िंदगी, उधर है मौत खड़ी
कोई क्या जाने कहाँ है सीमा, उलझन आन पड़ी
उलझन आन पड़ी
कानों में ज़रा कह दे, कि आये कौन दिशा से हम
तू प्यार का सागर है ...

Personal Experience:
हमें बाबा मिले उससे पहले exact यही मनो स्थिति थी हमारी। बड़े ही दर्द के साथ हम दिल से पुकारते थे कि कोई हमे यहां से निकालो, हमे इस जहान में कुछ भी माना कुछ भी अच्छा नहीं लगता।

Points: ज्ञान योग धा... M.imp.

01-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

ओम् शान्ति। यह कोई सिर्फ प्यार का सागर नहीं, ज्ञान का सागर है। ज्ञान और अज्ञान। ज्ञान को दिन, अज्ञान को रात कहा जाता है। ज्ञान अक्षर ही अच्छा है। अज्ञान अक्षर बुरा है। आधाकल्प है ज्ञान की प्रालब्ध। आधाकल्प है अज्ञान की प्रालब्ध, अज्ञान की प्रालब्ध है दु:ख। ज्ञान की प्रालब्ध सुख है। यह तो बहुत सहज समझने की बातें हैं, दिन है ज्ञान का। रात है अज्ञान, यह भी किसको पता नहीं है। ज्ञान किसको कहा जाता है, अज्ञान किसको कहा जाता है, यह बेहद की बातें हैं। तुम सबको समझाते हो ज्ञान क्या है, भक्ति क्या है। ज्ञान से तुम पूज्य बन रहे हो। जब पूज्य बन जाते हो तो पूजा की सामग्री को जान जाते हो। यह भी तुम जानते हो कि यह जो मन्दिर आदि हैं, यह सब यादगार हैं। उनकी जीवन कहानी को भी तुम जानते हो। जो पूजा करने जाते हैं वह खुद नहीं जानते। पूजा को भक्ति कहा जाता है, भगवान को भक्तों से मिलना है - भक्ति का फल देने के लिए। सो भगवान ही आकर पुजारी से पूज्य बनाते हैं। पूज्य सतयुग में पुजारी कलियुग में होते हैं। तुम

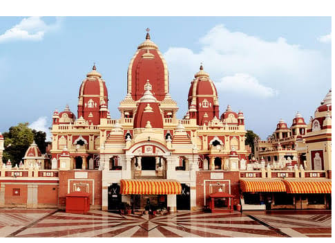

Attention..!

01-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

As Certain as Death

बच्चे जानते हो आज क्या हैं, कल क्या होना है। विनाश तो जरूर होने का है, कोई भी समय हो सकता है। तैयारी हो रही है। गाया हुआ भी है अनेक कुदरती आपदायें होती हैं। यह तो लिख देना चाहिए - गृह युद्ध और कुदरती आपदायें, उनको कोई ईश्वरीय आपदायें नहीं कहेंगे। यह तो ड्रामा की नूँध है, जिसमें नेचुरल कैलेमिटीज़ सब आने वाली हैं। विनाश में भी मदद करेंगे। मूसलाधार बरसात पड़ेगी। भूखों मरेंगे, अर्थक्वेक आदि सब आने की हैं। इन द्वारा ही विनाश होने का है। बच्चे जानते हैं, यह तो जरूर होने का है। नहीं तो सतयुग में इतने थोड़े मनुष्य कैसे होंगे, जरूर इकट्ठा विनाश होगा। बच्चे अच्छी रीति जानते हैं, यह सब कपड़े धोये जायेंगे। यह बेहद की बड़ी मशीनरी है। गाया जाता है मूत पलीती कपड़ धोए... इन कपड़ों की बात नहीं। यह है शरीर की बात। आत्माओं को योगबल से धोना है। इस समय 5 तत्व तमोप्रधान हैं तो शरीर भी ऐसे बनते हैं। पतित-पावन बाप आकर पावन बनाते हैं और सब खलास हो जाते हैं। तुम जानते हो पावन

बेहद की बड़ी मशीनरी

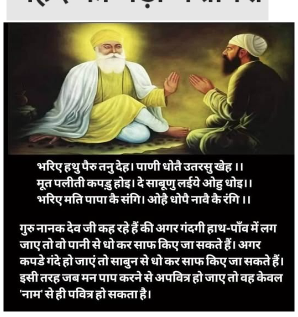

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

चढ़ाओ नशा...

How lucky and Great we are...!

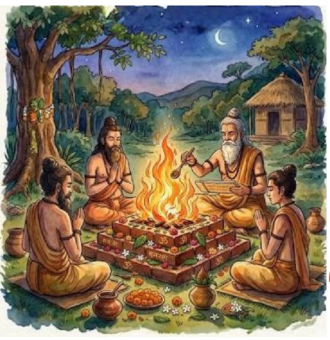

कैसे बनते हैं। रास्ता बहुत सहज बताते हैं। मनुष्य तो कुछ भी नहीं समझते। जहाँ-जहाँ भक्ति यज्ञ आदि होते हैं, वहाँ जाकर समझाना चाहिए कि "जिनकी तुम भक्ति करते हो उनकी बायोग्राफी समझने से ही तुम देवता बन सकते हो। उन्होंने जीवनमुक्ति कैसे पाई सो तो समझो, तो तुम भी जीवनमुक्ति पा सकते हो।" मन्दिरों में बैठ जीवन कहानी समझाने से अच्छी रीति समझेंगे। Impact of Positive vibrations

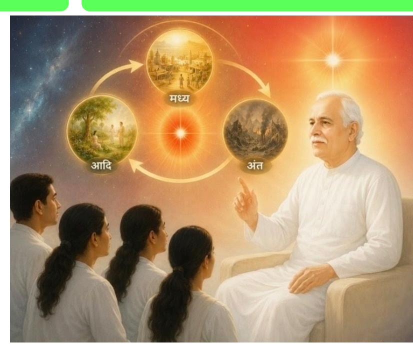

वाह रे मैं...

But we know, How Lucky & Great we are..!

तुम भी बाप से अभी जीवन कहानी सुनते हो, तुम बच्चों को कितनी समझ मिलती है। परमपिता परमात्मा की जीवन कहानी कोई भी नहीं जानते। सर्वव्यापी कहने से जीवन कहानी थोड़ेही हो जाती है। तुम बच्चे अभी परमपिता परमात्मा की जीवन कहानी को जानते हो, यानी आदि-मध्य-अन्त को जानते हो। Mind It... इस समय को आदि कहेंगे। जबकि बाप आकर पतितों को पावन बनाते हैं फिर मध्य में भक्ति का पार्ट चलता है। बाप कहते हैं इस

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

समय मैं आकर स्थापना करता, कराता हूँ। करन-करावनहार हूँ। प्रेरणा को करना नहीं कहेंगे। बाबा आकर इनकी कर्मेन्द्रियों द्वारा करते हैं, इसमें प्रेरणा की बात नही। करन-करावनहार तो जरूर सम्मुख हो करायेंगे। ये पक्का समझ लो.. प्रेरणा से कुछ भी नहीं हो सकता। आत्मा, बिगर शरीर कुछ भी नहीं कर सकती है। बहुत कहते हैं ईश्वर ही प्रेरणा से सब कुछ करता है। बाबा आप प्रेरणा करो, हमारे पति की बुद्धि ठीक हो जाए। बाप कहते हैं - प्रेरणा की तो इसमें बात ही नहीं। फिर शिव जयन्ती क्यों Simple Logic मनाई जाती। प्रेरणा से काम हो तो फिर आये ही क्यों? एक तो ईश्वर क्या चीज़ है, यह नहीं जानते। सिर्फ कह देते ईश्वर की प्रेरणा से सब कुछ होता है। निराकार प्रेरणा से कैसे करेंगे, वह तो करनकरावनहार है। आकरके रास्ता बताते हैं। कर्मेन्द्रियों से मुरली चलाते हैं। जब तक कर्मेन्द्रियों का आधार न ले, तब तक मुरली कैसे चलाये। ज्ञान का सागर है तो सुनाने के लिए मुख चाहिए ना।

Points

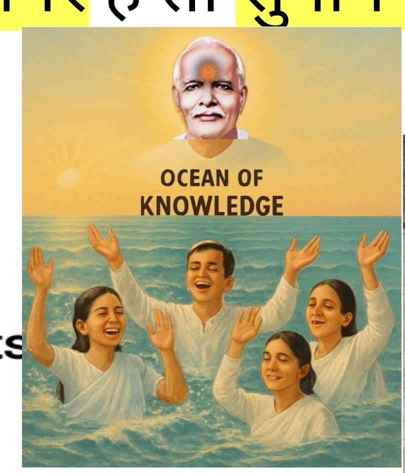

यादगार

चढ़ाओ नशा... How lucky and Great we are...!

01-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

अब तुम बच्चों को सारी दुनिया के आदि-मध्य-अन्त का पता पड़ा है। पूरी नॉलेज (complete Knowledge) मिली है। समझते हैं ज्ञान बिगर गति नहीं। ज्ञान कौन दे। अज्ञान मार्ग और ज्ञान मार्ग में फ़र्क तो देखो ना। विज्ञान भी कहते हैं। अज्ञान है अन्धियारा, बाकी ज्ञान और विज्ञान को हम मुक्ति-जीवनमुक्ति भी कह सकते हैं। तुमको अब पावन बनने का ज्ञान मिलता है। तुम स्वदर्शन चक्रधारी बनते हो। कोई सुनेंगे तो वन्डर खायेंगे। कहेंगे आत्मा ज्ञान लेती है तो आत्मा जरूर संस्कार ले जायेगी ना। मनुष्य से देवता बनते हो तो ज्ञान रहना चाहिए। परन्तु बाप समझाते हैं यह पुरुषार्थ है प्रालब्ध के लिए। प्रालब्ध मिल गई फिर ज्ञान की क्या दरकार है। सतयुग है ही तुम बच्चों के लिए प्रालब्ध। यह बातें सुनने से ही वन्डर खायेंगे। यह ज्ञान परम्परा क्यों नहीं चलता, बाप कहते हैं यह प्राय:लोप हो जाता है। दिन हो गया फिर अज्ञान तो है नहीं, जो ज्ञान की दरकार रहे। यह भी समझने समझाने की बातें हैं। फट से कोई समझ नहीं सकते। शिवबाबा भारत में ही आते हैं, बच्चों के लिए सौगात ले आते

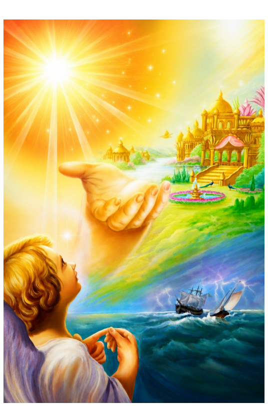

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

हैं, भक्ति का फल देने लिए। भक्ति के बाद है सद्गति। यह विनाश भी होगा जरूर। आसार खड़े हैं। तुम सुनते रहेंगे - चिनगारी लगती है तो एक दो घण्टे में सारा मकान जलकर भस्म हो जाता है।

Nothing New

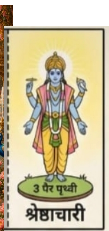

यह कोई नई बात नहीं है, विनाश तो होना जरूर है। सतयुग में होते ही हैं थोड़े मनुष्य, श्रेष्ठाचारी। तो श्रेष्ठाचारी बनने में कितनी मेहनत लगती है। माया नाक से एकदम पकड़ लेती है। ऐसे गिरने वालों को चोट बहुत लगती है। टाइम लग जाता है। बड़े ते बड़ी चोट है काम विकार की इसलिए कहा जाता है - काम महाशत्रु है। यही पतित बनाते हैं। झगड़ा होता ही है विकार पर। विकार के लिए नहीं छोड़ेंगे तो जरूर कहेंगे - इससे तो बर्तन साफ करें वो अच्छा है। झाड़ू पोंछा लगायेंगी परन्तु पवित्र रहेंगी, इसमें हिम्मत बहुत चाहिए। जब कोई बाप की शरण में आते हैं तो फिर माया भी लड़ना शुरू करती है। 5 विकारों की बीमारी और ही अधिक उथल खाती है। पहले तो पक्का निश्चयबुद्धि होना चाहिए। जीते जी मरे हुए हैं। यहाँ से लंगर उठा लिया है। कलियुगी, विकारी किनारा तुमने छोड़

m.m.m....imp.

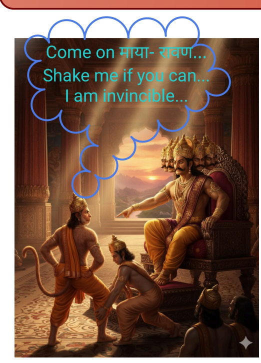

Note it down

Always remember this..

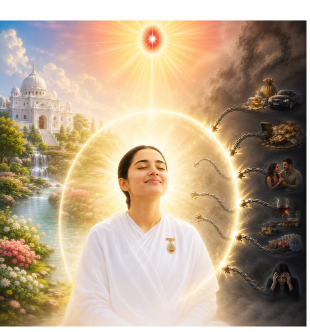

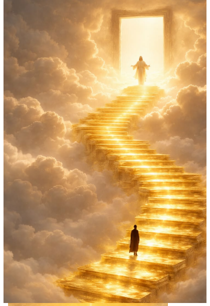
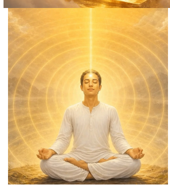

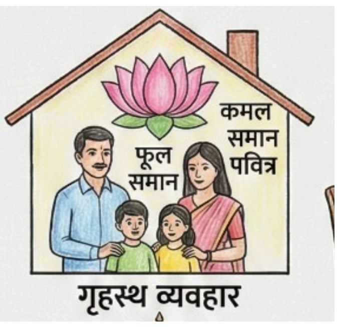

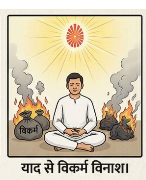

दिया है। अब हम यात्रा पर जा रहे हैं - हम अशरीरी हो अपने घर जाते हैं। आत्मा को यह ज्ञान है कि हम एक शरीर छोड़ दूसरे में जायेंगे। हम गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल फूल समान पवित्र बन यात्रा पर रहते हैं। बुद्धि में याद रहे कि यह तो कब्रिस्तान है, फिर हम सुखधाम में जायेंगे। हमको बाबा वर्सा देने की युक्ति बता रहे हैं। पावन बनने (One & Only way) के लिए हम योग में रहते हैं। याद से ही विकर्म विनाश होंगे तब आत्मा शरीर छोड़ेगी। यात्रा कितनी वन्डरफुल है। सिर्फ बाप को याद करो, अपनी राजधानी को याद करो। इतनी सहज बात (That's All) भी याद नहीं पड़ती है। अल्फ को याद करो, बस। परन्तु माया वह भी याद करने नहीं देती, मेहनत लगती है। आत्मा को ज्ञान मिला है, हमारा बाबा आया हुआ है। आत्मा पढ़ती है ना। आत्मा शरीर द्वारा जन्म लेती है। आत्मा भाई-भाई है। देह-अभिमान में आने से फिर अनेक सम्बन्ध हो जाते हैं। यहाँ तुम भाई-बहिन हो गये। आपस में भाई-भाई भी हो, बहन भाई भी हो। प्रवृत्ति मार्ग है ना। दोनों को वर्सा चाहिए। आत्मा ही पुरुषार्थ करती

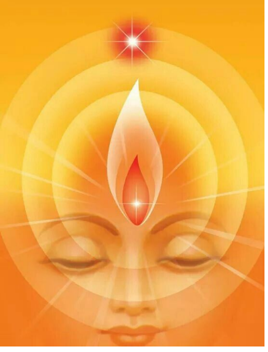

So, Be Prepared

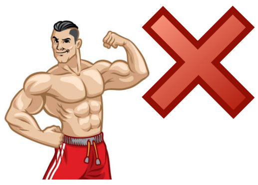

है। अपने को आत्मा समझना - यही मेहनत है। Point to be Noted देह-अभिमान न रहे। शरीर ही नहीं तो विकार किससे करेंगे। हम आत्मा हैं, बाप के पास जाना है। शरीर का भान ही न रहे। जितना योगी बनते जायेंगे, कर्मेन्द्रियाँ शान्त होती जायेंगी। देह-अभिमान में आने से समझा? कर्मेन्द्रियाँ चंचल होती हैं। आत्मा जानती है हमको प्राप्ति हो रही है। शरीर से अलग होते जायेंगे, तो कर्मेन्द्रियाँ शान्त होती जायेंगी। संन्यासी लोग दवाई खाकर कर्मेन्द्रियों को शान्त करते हैं। वह तो हठयोग हो गया ना। तुमको तो योग से काम लेना है। क्या योगबल से तुम वश नहीं कर सकते हो? जितना आत्म-अभिमानी होते जायेंगे तो कर्मेन्द्रियाँ शान्त हो जायेंगी। बड़ी मेहनत करनी पड़ती है, प्राप्ति तो बहुत ऊंच है ना। बाप कहते हैं - योगबल से तुम विश्व के मालिक बनते हो। कर्मेन्द्रियों पर जीत पहनते हो इसलिए भारत का योग नामीग्रामी है। तुम मनुष्य से देवता, पतित से पावन बनते हो। प्रजा भी स्वर्गवासी तो है ना। योगबल से तुम स्वर्गवासी बनते हो। बाहुबल से नहीं बन सकते हो। मेहनत कोई बहुत नहीं है।

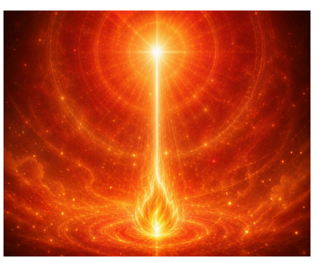

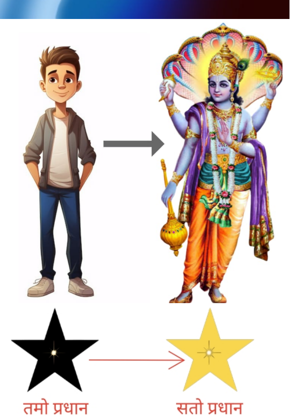

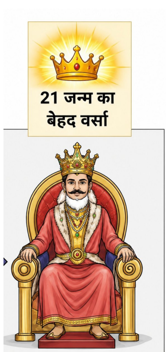

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

कुमारियों के लिए तो जैसे मेहनत ही नहीं है। फ्री हैं। विकार में गई तो बड़ी पंचायत हो जाती है। कुमारी रहना अच्छा है। नहीं तो फिर अधर कुमारी नाम पड़ जाता है।

युगल भी क्यों बनें! इसमें भी नाम रूप का नशा चढ़ता है।

Attention Please..!

यह भी मूर्खता है। युगल बनने के बाद पवित्र रहने के लिए बड़ी अच्छी हिम्मत चाहिए।

समझा?

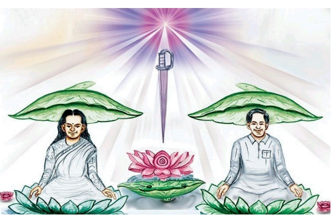

ज्ञान की पूरी पराकाष्ठा चाहिए। बहुत हैं जो हिम्मत करते हैं परन्तु आग की आंच आ जाती है तो खेल खलास इसलिए बाबा कहते हैं कुमारी फिर भी अच्छी है। अधरकुमारी बनने का ख्याल भी क्यों करना चाहिए। कुमारियों का नाम बाला है। बाल ब्रह्मचारी हैं। बाल ब्रह्मचारी रहना अच्छा है, ताकत रहती है। दूसरे कोई की याद नहीं आयेगी।

बाकी हिम्मत है तो करके दिखाओ, परन्तु मेहनत है। दो हो पड़ते हैं ना। कुमारी है तो अकेली है। दो से द्वेत आ जाता है। जहाँ तक हो सके कुमारी हो रहना अच्छा है। कुमारी सेवा पर निकल सकती है।

बंधन में पड़ने से फिर बन्धन वृद्धि को पाते हैं। ऐसा जाल बिछाना ही क्यों चाहिए जो बुद्धि फँस

May I have your Attention Please..!

01-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

पड़े। ऐसे जाल में फँसना ठीक नहीं है। कुमारियों के लिए तो बहुत अच्छा है। कुमारियों ने नाम भी निकाला है। कन्हैया नाम गाया जाता है ना। कुमारी हो रहना बड़ा अच्छा है। इन्हों के लिए बहुत सहज है। स्टूडेन्ट लाइफ पवित्र लाइफ भी है। बुद्धि भी फ्रेश रहती है। कुमारों को भीष्म पितामह जैसा बनना है। कल्प पहले भी रहे हैं तब तो देलवाड़ा मन्दिर में यादगार बना हुआ है।

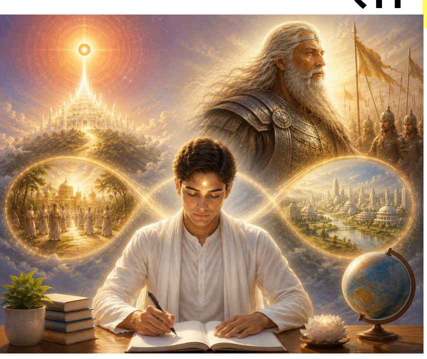

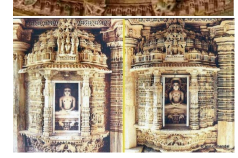

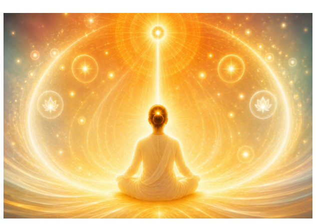

अब बाप बच्चों को फरमान करते हैं, मुझे याद करो। और सब बातों को छोड़ तुम अपना कल्याण करो। बाप को याद करने में ही कल्याण है। भूल-चूक होती है, बच्चे गिर पड़ते हैं, तुम परचिंतन को छोड़ अपना कल्याण करो। दूसरे चिंतन में जाओ ही नहीं। तुम सोने जैसा बन जाओ औरों को भी रास्ता बताओ। सतोप्रधान बनने का एक ही उपाय है। पावन बनने के बिगर मुक्तिधाम में जा नहीं सकते। उपाय एक ही है फिर अन्त मती सो गति हो जायेगी। झरमुई झगमुई छोड़ दो। नहीं तो

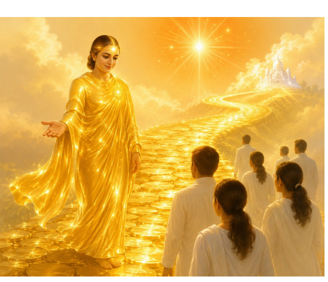

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

Attention Please..!

01-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

अपना ही नुकसान करेंगे। बाप कोई श्राप नहीं देते हैं। श्रीमत पर नहीं चलते तो आपेही अपने को श्रापित करते हैं। अच्छा! ये पक्का समझ लो..

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:

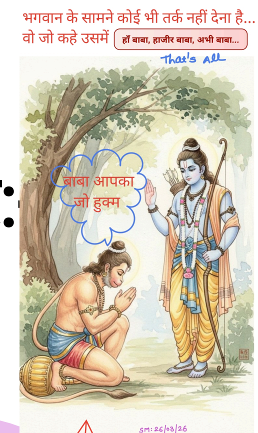

1) निश्चयबुद्धि बन जीते जी इस पुरानी दुनिया से अपना लंगर उठा लेना है। बाप के हर फरमान को पालन कर अपना कल्याण करना है।

2) दूसरों का चिंतन छोड़ अपनी बुद्धि को स्वच्छ सोने जैसा बनाना है। झरमुई-झगमुई में अपना समय नष्ट नहीं करना है। योगबल से अपनी कर्मेन्द्रियों को शान्त, शीतल बनाना है।

Points: 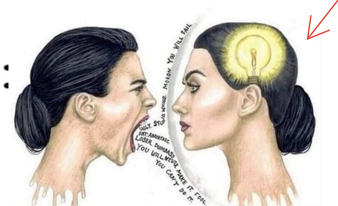 धारणा सेवा M.

Method/Process/Instrument

01-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वरदान: अपनी विजय वा सफलता को निश्चित समझकर सदा निश्चिंत रहने वाले निश्चयबुद्धि भव

Outcome/Output/Result

Finale Achievement

जो बच्चे सदा बाप में, स्वयं के पार्ट में और ड्रामा की हर सेकण्ड की एक्ट में 100 प्रतिशत निश्चयबुद्धि हैं उनकी विजय वा सफलता निश्चित है।

100 % Guaranteed

Characteristics of 100% निश्चयबुद्धि

निश्चित विजय होने के कारण वे (1) सदा निश्चिंत रहते हैं। उनके (2) चेहरे से चिंता की कोई भी रेखा दिखाई नहीं देगी। उन्हें (3) सदा निश्चय रहता है कि यह कार्य वा यह संकल्प सिद्ध हुआ ही पड़ा है। उन्हें (4) कभी किसी बात में क्वेश्चन नहीं उठ सकता।

very very very

Subtle Point to understand

Subtle Psychology

स्लोगन: सुनने-सुनाने में भावना और भाव को बदल देना ही वायुमण्डल खराब करना है।

s: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

ये अव्यक्त इशारे -

अपवित्रता के बीज को भी समाप्त कर

सम्पूर्ण स्वच्छ (पवित्र) बनो

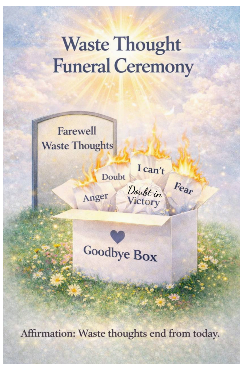

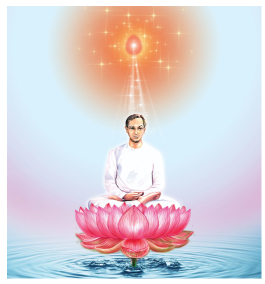

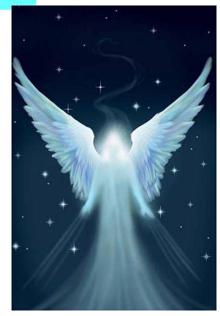

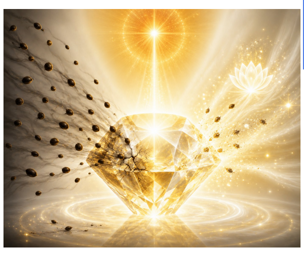

सम्पूर्ण पवित्रता के हिसाब से व्यर्थ संकल्प भी अपवित्रता का बीज है। समझा?

व्यर्थ संकल्प चलना, मैजारिटी बच्चों में अभी यह संस्कार रहा हुआ है।

व्यर्थ संकल्प का आधार मन है, जो मनमनाभव होने नहीं देता इसलिए श्रीमत रूपी लगाम टाइट कर व्यर्थ संकल्पों की अपवित्रता को खत्म करो।

If you wish to stay connected, Here is the link

WhatsApp

TELEGRAM

WORLD WIDE WEB

BKdrluhar

Mind maps are Available on WhatsApp and Telegram Only

अव्यक्त बापदादा:

वरदान का फल निकालने के लिए बार-बार वरदान को स्मृति में लाओ। स्मृति स्वरूप के स्थिति में स्थित रहो।

AV: 30/11/2009
Revise: 12/4/26

All वरदान slogans July 26 → Click

All अव्यक्त इशारे July 26 → Click

All वरदान, slogans and अव्यक्त इशारे At Single place → Click

अव्यक्त बापदादा:

आजकल के जमाने के हिसाब से तो बातें बहुत बदलती जाती हैं। गवर्मेन्ट के कायदे भी बदलने हैं, मनुष्यों की वृत्ति भी बदलनी है। तो हर एक के जीवन में व्यर्थ बातें तो आनी ही हैं, तो व्यर्थ को समाप्त करने के लिए समर्थ संकल्प चाहिए। वेस्ट को खत्म करने के लिए बेस्ट संकल्प चाहिए। तो रोज़ की मुरली में जो वरदान, स्लोगन आता है उसे सुनो। यह वरदान ही श्रेष्ठ संकल्प है। जब व्यर्थ आवे तो श्रेष्ठ संकल्प मन को चाहिए। मन खाली नहीं रह सकता है। मन को कुछ न कुछ संकल्प चाहिए। तो व्यर्थ वेस्ट को बेस्ट करने के लिए आपको यह वरदान और स्लोगन आदि के शब्द मन को चेंज करने के लिए चाहिए।

Remedy

Subtle Psychology

AV: 15/03/2010
Revise: 31/05/2026

अभी बापदादा ने देखा कि बच्चों को माया भी अब तक छोड़ती नहीं है उनका भी प्यार है। और आजकल दो रूपों में विशेष माया भी चांस लेती है। दो रूप में आती है - एक व्यर्थ संकल्प और दूसरा कहीं-कहीं कभी कभी यह भी लहर है जो मैंने किया वा सोचा मैं ही राइट हूँ मैं कम नहीं हूँ। यह लहर फैली हुई है - मैं ही राइट हूँ लेकिन जो कनेक्शन में आते हैं या निमित्त बने हुए हैं वह भी आपके विचार को साथ देते हैं! दूसरों की भी वेरीफिकेशन मिलनी चाहिए।

Attention Please..!

यह व्यर्थ संकल्प टाइम वेस्ट करते हैं। इसलिए बापदादा रोज की मुरली मनन करने के लिए सेवा करने के लिए होमवर्क में रोज देते हैं। अगर मनन करो या मनन करते-करते मगन हो जाओ तो यह रोज का होमवर्क मन को बिजी करने का साधन है।

Example

सुनना और मनन करना या मगन हो जाना यह बापदादा रोज का होमवर्क इसीलिए देता है। जैसे बच्चों को होमवर्क इतना ज्यादा दे देते हैं जो उनकी बुद्धि करने में बिजी रहे। ऐसे रोज की मुरली उसमें चार ही सबजेक्ट का होमवर्क है। मन्सा का भी है वाणी का भी है कर्म का भी अटेन्शन और दिव्यता का इशारा होमवर्क है। तो होमवर्क में बिजी रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प के आने की मार्जिन नहीं रहेगी।

समझा?

इस विधि को अपनाते रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प स्वत: ही आपसे विदाई ले जायेंगे

क्योंकि बापदादा ने देखा याद की यात्रा पर सभी का नम्बरवार अटेन्शन है वाचा सेवा में भी अटेन्शन है। लेकिन अभी अपने संस्कार या दूसरों के संस्कार को परिवर्तन करना यह स्वभाव संस्कार जिसको रॉयल रूप में आप कहते हो नेचर मेरी नेचर है भाव नहीं है नेचर है यह धारणा की सबजेक्ट अभी भी रॉयल रूप में आती रहती है। तो बापदादा आजकल यही इशारा देते हैं कि जो भी धारणाओं में कमी होती है उसको अभी विशेष अटेन्शन दो।

AV: 24/10/2010

Revise: 14/06/2026

अमृतवेला और सूक्ष्म सेवा

अमृतवेला

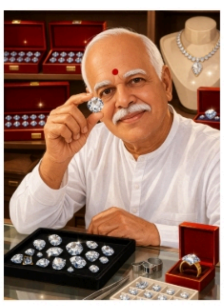

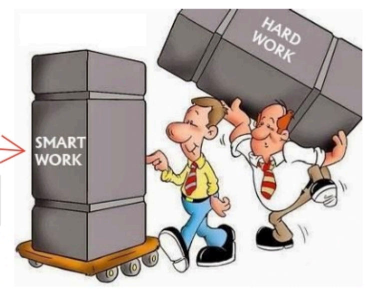

11.5 रोज़ अपने सम्पर्क वाली आत्माओं पर संकल्प द्वारा नज़र दौड़ाओ :

संकल्पों द्वारा ईश्वरीय सेवा करना — यह भी सेवा का श्रेष्ठ और नया तरीका है। जैसे जवाहरी होता है तो रोज़ सुबह को दुकान खोलते ही अपने हर रत्न को चैक करता कि साफ़ हैं, चमक ठीक है, ठीक जगह पर रखे हुए हैं, वैसे **रोज़ अमृतवेले अपने सम्पर्क में आने वाली आत्माओं पर संकल्प द्वारा नज़र दौड़ाओ**। जितना आप उन्हों को संकल्प से याद करेंगे, उतना वह संकल्प उन्हों के पास पहुँचेगा और वह कहेंगे कि हमने भी बहुत वारी आपको याद किया था। इस प्रकार सेवा के नये-नये तरीके अपनाते आगे बढ़ते जाओ। हर मास सम्पर्क वाली आत्माओं का विशेष कोई प्रोग्राम रखो, स्नेह मिलन रखो, अनुभव की लेन-देन वा मनोरंजन का प्रोग्राम रखो। किसी-न-किसी तरह से बुलाकर सम्पर्क बढ़ाओ। यह नहीं सोचो कि दो निकले या तीन निकले। एक भी निकले तो भी अच्छा, एक ही दीपक दीपमाला तैयार कर देगा। ← most optimistic approach of sweet बाबा

अर्जुन उवाच

अथ केन प्रयुक्तोऽयं पापं चरति पूरुषः।
अनिच्छन्नपि वार्ष्णेय बलादिव नियोजितः॥

अर्जुन बोले—हे कृष्ण! तो फिर यह मनुष्य स्वयं न चाहता हुआ भी बलात् लगाये हुएकी भाँति किससे प्रेरित होकर पापका आचरण करता है?॥ ३६॥

श्रीभगवानुवाच

काम एष क्रोध एष रजोगुणसमुद्भवः।
महाशनो महापाप्मा विद्ध्येनमिह वैरिणम्॥

श्रीभगवान् बोले—रजोगुणसे उत्पन्न हुआ यह काम ही क्रोध है, यह बहुत खानेवाला अर्थात् भोगोंसे कभी न अघानेवाला और बड़ा पापी है, इसको ही तू इस विषयमें वैरी जान॥ ३७॥

धूमेनाव्रियते वह्निर्यथादर्शो मलेन च।
यथोल्बेनावृतो गर्भस्तथा तेनेदमावृतम्॥

जिस प्रकार धूएँसे अग्नि और मैलसे दर्पण ढका जाता है तथा जिस प्रकार जेरसे गर्भ ढका रहता है, वैसे ही उस कामके द्वारा यह ज्ञान ढका रहता है॥ ३८॥

आवृतं ज्ञानमेतेन ज्ञानिनो नित्यवैरिणा।
कामरूपेण कौन्तेय दुष्पूरेणानलेन च॥

और हे अर्जुन! इस अग्निके समान कभी न पूर्ण होनेवाले कामरूप ज्ञानियोंके नित्य वैरीके द्वारा मनुष्यका ज्ञान ढका हुआ है॥ ३९॥

Enemy Forever

इन्द्रियाणि मनो बुद्धिरस्याधिष्ठानमुच्यते।
एतैर्विमोहयत्येष ज्ञानमावृत्य देहिनम्॥

इन्द्रियाँ, मन और बुद्धि—ये सब इसके वासस्थान कहे जाते हैं। यह काम इन मन, बुद्धि और इन्द्रियोंके द्वारा ही ज्ञानको आच्छादित करके जीवात्माको मोहित करता है॥ ४०॥

तस्मात्त्वमिन्द्रियाण्यादौ नियम्य भरतर्षभ।
पाप्मानं प्रजहि ह्येनं ज्ञानविज्ञाननाशनम्॥

इसलिये हे अर्जुन! तू पहले इन्द्रियोंको वशमें करके इस ज्ञान और विज्ञानका नाश करनेवाले महान् पापी कामको अवश्य ही बलपूर्वक मार डाल॥ ४१॥

इन्द्रियाणि पराण्याहुरिन्द्रियेभ्यः परं मनः।
मनसस्तु परा बुद्धिर्यो बुद्धेः परतस्तु सः॥

इन्द्रियोंको स्थूल शरीरसे पर यानी श्रेष्ठ, बलवान् और सूक्ष्म कहते हैं; इन इन्द्रियोंसे पर मन है, मनसे भी पर बुद्धि है और जो बुद्धिसे भी अत्यन्त पर है वह आत्मा है॥ ४२॥

एवं बुद्धेः परं बुद्ध्वा संस्तभ्यात्मानमात्मना।
जहि शत्रुं महाबाहो कामरूपं दुरासदम्॥

इस प्रकार बुद्धिसे पर अर्थात् सूक्ष्म, बलवान् और अत्यन्त श्रेष्ठ आत्माको जानकर और बुद्धिके द्वारा मनको वशमें करके हे महाबाहो! तू इस कामरूप दुर्जय शत्रुको मार डाल॥ ४३॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे कर्मयोगो नाम तृतीयोऽध्यायः॥ ३॥

Formidable Enemy

Biggest enemy of soul/human Being is not any person/religion, but the 'Kaam vikar' is.

ध्यायतो विषयान्पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते।
सङ्गात्सञ्जायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते॥

विषयोंका चिन्तन करनेवाले पुरुषकी उन विषयोंमें आसक्ति हो जाती है, आसक्तिसे उन विषयोंकी कामना उत्पन्न होती है और कामनामें विघ्न पड़नेसे क्रोध उत्पन्न होता है॥ ६२॥

क्रोधाद्भवति सम्मोहः सम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति॥

क्रोधसे अत्यन्त मूढ़भाव उत्पन्न हो जाता है, मूढ़भावसे स्मृतिमें भ्रम हो जाता है, स्मृतिमें भ्रम हो जानेसे बुद्धि अर्थात् ज्ञानशक्तिका नाश हो जाता है और बुद्धिका नाश हो जानेसे यह पुरुष अपनी स्थितिसे गिर जाता है॥ ६३॥

Soul

विषयो के चिंतन से आसक्ति
आसक्ति से कामना/काम
कामना में विघ्न पड़ने से क्रोध
क्रोध से *अत्यंत* मूढ़भाव
मूढ़भाव से स्मृतिमें भ्रम
स्मृति में भ्रम से बुद्धि अर्थात ज्ञानशक्ति का नाश
बुद्धि का नाश हो जाने से पुरुष(आत्मा) अपनी स्थिति से गिर जाता है।

गीता अध्याय 2 - श्लोक 62,63

So, ultimate Root cause as per revered "Geeta" is

Kaam vikar